Available online at http://www.nrjp.co.in

Journal of Management Science, Operations & Strategies
Vol. 3, Issue, 01. 79-87p, April. 2019

National Research & Journal Publication

Review Article

डॉ० सरोजिनी उग्रवाल की कहानियों में नारी-पात्र

डॉ. विनीता रानी

एसो. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

के.जी.के. महाविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.)

Abstract

डॉ. सरोजिनी अग्रवाल को उपन्यास, नाटक, निबंध व संस्मरण आदि सभी गद्य विधाओं में कहानी लेखन सबसे अधिक सुविधाजनक लगता है इसके लिए उन्होंने कुछ कारण दिए हैं-

Copyright©2019, *डॉ विनीता रानी* *This is an open access article for the issue release and distributed under the NRJP Journals License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*

"एक तो इसमें रचयिता अपने कथा-प्रसंगों के चरित्र चयन एवं उनके क्रम निर्वाह में पूर्ण मुक्त रहता है और दूसरे उसे अपनी वैचारिक अवधारणाओं को भी व्यक्त करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक अवकाश मिलता है और तीसरी विशेषता यह है कि कथा-शैली के लिए उसकी स्वाधीनता सदैव सुरक्षित रहती है चाहे वह पत्र-शैली अपनाये, चाहे संवाद या डायरी शैली और चाहे विवरणात्मक या भावनात्मक शैली। एक प्रकार से किसी शास्त्रीय ढॉचे के हिसाव से इतना काटना छाँटना नहीं पड़ता कि उसका सहज रूप ही विरूप हो जाये।"

उन्हें इसीलिए प्रारंभ से ही कहानी विधा सर्वप्रिय रही है। उनकी सृजन यात्रा इन्हीं छोटी-छोटी कहानियों के लेखन से शुरू हुई है। आपके तीन प्रकाशित कहानी संग्रह हैं-'शब्दों के घेर से', 'वोल री कठपुतली' और 'अविराम'। इसके अतिरिक्त एक प्रकाशित कहानी संग्रह भी है 'वह तोड़ती पत्थर' यह उनके अध्ययन काल सन 53 से सन् 1957 के मध्य लिखा गया है और उसमें लगभग वीस कहानियाँ संग्रहीत हैं। यह एक प्रकार से नारी की व्यथा की कई कोणों से खींची गई चित्रावली है।

उनके चारों कहानी संग्रहों का मूल कथ्य नारी जीवन और नारी मन ही है। जैसे 'उढ़ि जहाज को पंछी फिर जहाज पर आवे' उसी प्रकार उनकी लेखनी भी अधिकतर नारी नियति से ही जुड़ी रही है। 'अविराम' में एक लम्बी कहानी या उपन्यासिका भी है, इसी शीर्षक से है और प्रकारान्तर से यह भी एक प्रौढ़ा नारी के अपने विगत जीवन का पुनरावलोकन और वर्तमान संदर्भो में अपने आपसे निरन्तर होने वाला संवाद ही है।

साहित्य की हर विधा का अपना स्वरूप, अपने तत्व और अपना उद्देश्य होता है जिसके आधार पर ही उनकी सार्थकता का आकलन किया जाता है। इसीलिए लेखिका की कहानियों को परखने से पूर्व कहानी की कुछ परिभाषाओं और विशेषतया उसमें

पात्र योजना की क्या विशिष्ट भूमिका है इस पर दृष्टि डालना आवश्यक है।

विविध विद्वानों और कहानीकारों ने इस विधा के स्वरूप को स्पष्ट किया है-

सर्वप्रथम प्रेमचन्द्र ने 'हिन्दी कहानी को परिभाषित करते हुए लिखा है-" अनुभूतियाँ ही रचनाशील भावना से अनुरंजित होकर 'कहानी' बन जाती है।" उनकी दृष्टि में "सबसे उत्तम कहानी वह होती है जो किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर आधारित हो। महाकवि जयशंकर प्रसाद जी ने कहानी के बारे में लिखा है- "आख्यायिका में सौन्दर्य की झलक का रस है। मान लीजिए आप किसी तेज सवारी से चले आ रहे हैं। रास्ते में एक गोल-मटोल शिशु खेल रहा है। उसकी सुन्दरता की झलक मिलने भर से ही सवारी आगे निकल जाती है, किन्तु उतनी झलक ही इतनी होती है कि उसकी स्थायी रेखा आपके अन्तर्पट पर अंकित हो जाती है। यही काम कहानी भी करती है। इसी क्रम में इलाचन्द्र जोशी ने कहानी का स्वरूप इस प्रकार परिभासित किया है-"जीवन का चक्र नाना परिस्थितियों के संघर्ष से उल्टा-सीधा चलता रहता है। इस सुवृहत चक्र की विशेष परिस्थिति का स्वाभाविक गति को प्रदर्शित करने में ही कहानी की विशेषता है।

हिन्दी के उपर्युक्त कथाकारों की परिभाषाओं पर विचार करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि कहानी की कोई भी परिभाषा पूर्ण नहीं है। अधिकतर विद्वान किसी एक पक्ष को ही महत्व देते हैं। वास्तव में कहानी जीवन या जगत के किसी एक पक्ष का ऐसा संवदेनात्मक चित्रण है जिसकी विशेषताओं की केवल अनुभूति ही की जा सकती है। वास्तव में पाठक को भाव-विभोर करने वाली गद्यात्मक एवं कथात्मक घटना ही कहानी है।

अस्तु! कहानी, उपन्यास और नाटक तीनों ही गद्य विधाओं में अन्य तत्वों की अपेक्षा पात्रयोजना का विशेष महत्व होता है क्योंकि इसी के माध्यम से रचना की कथा वस्तु का उत्तरोत्तर निर्वाह किया जाताहै और प्रायः पात्रों के द्वारा ही कथाकार अपने बौद्धिक चिंतन को स्पष्ट करता है। विषय की दृस्टि से ये विधाएँ पौराणिक ऐतिहासिक या सामाजिक किसी भी वर्ग की हों बिना सशक्त पत्र योजना के किसी भी कृति का स्पृहणीय होना संभव नहीं है। पात्रों को उचित विधान एक प्रकार से विधा का मेरुदंड है।

अब पात्रों का वर्गीकरण भी लिग, गुण और भूमिका के आधार पर कई तरह से किया गया है पर अधिकांशतः रचना में पुरुष और नारी दोनो तरह के पात्र होते हैं। अब कहानियो की शैली में कई नए-नए प्रयोग होने लगे हैं जैसे पत्र शैली या संवाद शैली- इसमें कभी-कभी केवल सारी भूमिकायें नारी ही निभाती है। लेखिका की भी कई कहानियों इसी कोटि में आती हैं जैसे 'डायरी के पृष्ठ', 'एक पत्र-एक प्रश्न' या परिधियों आदि।

कहानियों के नारी पात्र -

लेखिका ने अपने तीनों कहानी संग्रहों में 'मैं और मेरी कहानियॉ' शीर्षक से लिखी भूमिकाओं में अपने नारी पात्रों के संदर्भ में कई स्वीकृतियों की हैं-

"मेरी कहानियों का मूल कथ्य भारतीय नारी का अंतःसंघर्ष ही रहा है.... मैं अपनी कथानायिकाओं को उनकी सहज वात्सल्यमयी, प्रेममयी एवं त्यागमयी स्वाभाविक वृत्तियों के लिए सदा महिमा मंडित करती रही हूँ"

"मेरी लेखकीय दृष्टि अब उन पंरपरावादी मूल्य चेतनाओं को छोड़कर आधुनिक अभिनव आयामों के समानान्तर नारी की अन्तश्चेतना को समझने लगी है शायद इसीलिए अब मेरी कथा नायिकायें अपने जीवन का निर्णय स्वयं लेने की बात करती है। पहले की तरह अब वे मौन कठपुतलियों नहीं हैं अब वे बोलने लगी हैं और आगे बढ़कर सवाल पूछने लगी हैं कि "मैं कहाँ थी?"

"मैं अपने दो सूत्र स्पष्ट करना चाहती हूँ एक तो आज भी अपने नारी चरित्रों को यह स्वतंत्रता नहीं दी है कि वे अपनी अस्मिता की प्रतिष्ठा को पति, परिवार या समाज के साथ एक प्रतिशोधात्मक संघर्ष के रूप में लेकर कल्याणकारी मर्यादाओं का उल्लंघन करने की उद्दण्डता करें और दूसरे आज भी मेरा विश्वास है कि अगर नारी ने अपनी प्रकृति प्रदत्त सीमाओं को नकार कर आगे बढ़ने की कुचेष्ठा की तो उसके हाथ कुछ नहीं लगेगा।

लेखिका की इन आत्मस्वीकृतियों के परिप्रेक्ष्य में यह तथ्य बिलकुल स्पष्ट है कि अब वे अपनी नारी पात्रों के स्वरूप को भारतीय और पाश्चात्य दोनों की ही अतिवादी अवधारणाधाओं से मुक्त कर एक संयत व संतुलित ढंग से गढ़ना चाहती हैं। उनकी आंतरिक चेष्टा यही है कि उनके नारी पात्र इस सनातन सत्य पर विश्वास करें कि ड्केपत्नीत्व और मातृत्व की गरिमा पाये बिना वे चाहे विश्व की साम्राज्ञी ही क्यों न बन जाएँ पर वे वंचिता ही रहेंगी। पर इसके साथ वे यह भी चाहती हैं। अब हर नारी को अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक ही करे परम्परा की काराओं से अपनी मुक्ति का सामूहिक प्रयास करना चाहिए। उन्हें नारी मुक्ति के नाम पर देह प्रदर्शन और यौन गतिविधियों के उच्छृखल आचरण बिलकुल भी सहन नहीं हैं। अपने नारी पात्र उन्हें अपने सहज, शालीन और आत्मविश्वास से भरे रूप में ही स्वीकार्य हैं।

यद्यपि सरोजिनी जी ने सभी आयु वर्गों और सामाजिक वर्गों की नारी-पात्रों की सृष्टि की है और साथ ही सारे संबंधों बेटी, पत्नी और मॉ के रूप में उन्होंने उन्हें प्रस्तुत किया है पर अधिकांशतः उनके नारी पात्र दो प्रकार के जीवन मूल्यों को लेकर अभिव्यक्त हुए हैं। इसीलिए हम उनके नारी पात्रों को बड़ी सरलता से दो रूपों में परख सकते हैं। ये दो रूप हैं -

1. रूढ़िवादी नारी पात्र

2. बुद्धिजीवी नारी पात्र

रूढ़िवादी नारी पात्र -

ये नारी पात्र वे हैं जिन्हें जन्म से ही संस्कारों के एक विशेष साँचे में डाल कर पाला पोसा और बड़ा किया गया है। उन्हें बचपन से ही तोते की तरह कुछ पाठ रटाये गए हैं कि पति का घर ही तुम्हारा असली घर है, पति को हमेशा परमेश्वर समझना उनकी सेवा करना तुम्हारा धर्म है, उनकी हर बात को बिना किसी विरोध के हमेशा सिर माथे लगाना आदि। बेटी को विदा कारते समय मां बाप को ही शिक्षायें देती है, बेटी-तू दोनों घरों की लाज है, याद रखना जहाँ तेरी डोली उतरी उसी आँगन से तेरी अरथी उठने में सबकी भलाई-वगैरह वगैरह। एक प्रकार से उनकी सोच को एक छोटे से पिजरे में चिड़िया की तरह ऐसे गोद कर दिया जाता है कि वे अपनी सीमाओं से निकल कर आकाश में उसने का सपना ही न देख सकें।

लेखिका ने स्वयं लिखा है-(इस वर्ग की) मेंरी कथा-नायिकाओं ने प्रायः आत्मोत्सर्ग का ही मार्ग

अपनाया है। वे अपने हर दुख को अपने ही भाग्य का लेख मान लेती है। वे कभी किसी को दोषी नहीं ठहराती और अपने प्रेमी, पति, पुत्र और परिवार के सुख के लिए स्वेच्छा से अपने हर अधिकार को छोड़ देती है।"

ऐसी मानसिकता वाली नारी पात्रों के त्याग और समर्पण से भरी उनकी अनेक कहानियों ने पाठकों की आँखों को सजल किया है। कहीं उनकी कथानायिका अपना ऑचल पसार कर स्वयं पत्नीत्व से मुक्ति मागती है और पति से दूसरा विवाह कर लेने की याचना करती है-

__ "माँ नहीं बन पाऊँगी क्या इसीलिए तुम मुझे सच्चे अर्थों में जीवन संगिनी भी नहीं बनने दोगें नलिन? क्यों मेरे आँचल में इतना भी आशीष नहीं डालोगें कि कम से कग मुझे इसका एहसास हो सके कि मैं तुम्हारी किसी कामना की पूर्ति का आधार बन सकी है? बोलो नलिन, बोलो, मुझे वंचिता तो मत बना दो मेरे देवता।

कभी अपने जीवन सहचर द्वारा अकारण चरित्रहीन का विशेषण दिए जाने पर वह पुत्र सहित चुपचाप पतिगृह से बाहर निकल आती है पर वर्षों तक प्रतीक्षा करती है कि एक दिन सच्चाई को जानकर वे स्वयं उसे लेने आयेंगे। प्रश्न करने पर संयत स्वर में इतना ही कहती है -

"केले के पेड़ को चाहे कोई कोटि जतन से क्यों न सींचे पर वह विना कटे फल नहीं देता..... सेवा और समर्पण के जल से निरंतर सींचने पर भी जिस पेड को आज तक हरा-भरा नहीं कर पाई शायद इस कटान के बाद विश्वास का यह कदली तरू फल-फूल उठे- यही सोचकर मैंने अपना भविष्य दांव पर लगा दिया है। इसी आस्था को लेकर मुझे प्रतीक्षा करने दो कॉल। एक अन्तहीन प्रतीक्षा.....

कभी उनकी कोई कथानायिका अपने पति की वासनात्मक उच्श्रृंखलताओं को चुपचाप सहती हुई भी अपने बच्चों और परिवार के प्रति अपने दायित्वों का यथाशक्ति निर्वाह करती है पर जव उसे संबंध विच्छेद की धमकी दी जाती है तो वह बिना कोई विरोध किए अपने जीवन का अंत करने का निर्णय लेती है और अपने अंतिम पत्र में केवल इतना लिखती है –

"मेरी मृत्यु के लिए कोई दोषी नहीं है। वे अपने नाम भी मेरे साथ जुड़ा नहीं रहने देना चाहते हैं और मैं उनके नाम का सिन्दूर लेकर इस संसार से जाने का संकल्प कर चुकी हूँ-बस इसीलिए .....

'शब्दो के घेरे से' संकलन की सभी कथानायिकायें चाहे वे दोनों किनारों की शुभा हो, या तैरती आवाजें की सुलोचना या वंचिता की शैलजा और या अनवने पड़ाव की सुधा-'सभी को एक बहुत ही छोटा सा सपना है कि वे अपने परिवार के सारे सदस्यों को संतुष्ट रखें पर ऐसा कभी नहीं हो पाता। वह कोल्हू के बैल की तरह एक ही छोटे गोल दायरे में चक्कर लगाती रहती है और बिना कुछ बोले अकेले बैठ कर अपने आँसू पीती है। कभी कोई अंतरंग सखी जब उसे अपनी गोद में लिटा कर बड़े अपनेपन से पूछती है तो उसकी पीड़ा अनायास झलक पड़ती है। वह सखी और कोई नहीं उसका अपना मन ही है जिसे वह अपना दर्द बॉटती हैं -

"मुझे तो सिर्फ इतना मालूम है कि मैं अपना सब कुछ देकर भी अपनी पूरी परिधि को सबको एक साथ पूरी तरह पा लेना चाहती हूँ... मेरा मन करता है मैं अपनी बाँहों और ऑचल के फैले घेरे में घर बाहर

सब कुछ समेट लूँ.... पर ऐसा नहीं हो पात..... कुछ न कुछ छूट ही जाता है....सबको पाने की कोशिश में किसी को भी खुश नहीं रख पाती।

सरोजिनी जी की कई कहानियों के नारी पात्रों के चरित्र जैसे अर्पिता की अर्पिता, 'चंपा के फूल' की अनु और 'इसलिए' की सुधा कुछ ज्यादा ही आदर्शवादी और भावात्मक हो गए हैं और आज के बदलते परिवेश में इतनी सहजशीलता और समर्पण की भावना की बात अविश्वासनीय सी लगती है पर लेखिका ने कहा है

"अपनी अधिकांश नायिकाओं के जीते-जागते चरित्रों की मैं स्वयं साक्षी रही हूँ। मेरी नायिकायें मेरी कोरी कल्पनायें नहीं हैं वे मेरी आँखों देखा सच हैं।"

आगे उन्होंने स्पष्ट किया है कि 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी' का समर्थन करती मेरी इन कहानियों की उपलब्धि क्या है? मैं प्रायः अपने से प्रश्न करती हूँ पर इस प्रश्न के उत्तर में मेरा मन केवल एक ही सच दुहराना चाहता है कि ये कहानियाँ वस्तुतः मेरी व्यक्तिगत डायरी के आँसू भीगे पृष्ठ हैं और डायरी किसी की भी हो उसके मूल्यांकन का आधार सिर्फ डायरीकार की आत्मतृप्ति होती है और कुछ उसका मन्तव्य हो ही नहीं सकता....मेरी हर कहानी मेरी आत्मजा है।

बुद्धिजीवी नारी पात्र -

सरोजिनी जी की कहानियों में नारी पात्रों की दूसरी श्रेणी बुद्धिजीवी नारियों की है जिनके पास अपनी बौद्धिक प्रतिभा की सामर्थ्य के साथ एक सुदृढ़ आर्थिक आधार भी है और जो अपने अधिकारों के प्रति पूर्ण जागरूक हैं।

"बुद्धिजीवी का शाब्दिक अर्थ है बुद्धि द्वारा अपनी आजीविका अर्जित करने वाला....जो भी व्यक्ति चाहे वह पुरूष हो या नारी जब किसी ऐसे प्रयास से जुड़ जाती है जहाँ प्रज्ञात्मक प्रयास से ही अर्थ प्राप्ति संभव है वही बुद्धिजीवी कहलाता है..... आज की सभी बुद्धिजीवी नारियों की मूल समस्या अनुकूलन यानी एडजस्टमेंट की समस्या है। यह अनुकूलन या समझौता मानसिकता से, अपने पारिवारिक परिवेश से और स्वयं अपनी संस्कारशीलता से।"

लेखिका के 'बोल री कठपुतली' कहानी संग्रह के नारी पात्र प्रायः इसी वर्ग के हैं और उनके इस त्रिकोणीय अन्तः संघर्ष को उन्होंने बड़ी सही सदाशयता से व्यक्त किया है। उन्होंने इस वास्तविकता को पूरी तरह स्वीकार कर लिया है कि आज की

आर्थिक रूप से समर्थ नारी अब अपनी अस्मिता के लिए उठ खड़ी हुई है और वह किसी भी स्थिति में पुरुषों की संपत्ति या कठपुतली बन कर जीने की अपेक्षा अकेले स्वतंत्र रहने के लिए दृढ़ संकल्प है। अब उसमें पति के अमर्यादित आचरण का कारण पूछने का साहस है।

पति के एक संदेश के बाद 'अस्मिता' कहानी की नायिका मिसेज मेहता वर्षों के वैवाहिक संबंध को तोड़ देती है और अपनी परिचिता से साफ साफ कहती हैं -

"सोचो, एक बहुत लम्बा वेहिसाब उबड़-खाबड़ रास्ता जिसके साथ कदम कदम मिलाकर पूरी सच्चाई के साथ तय किया हो वही सहयात्री सफर के अंत में मंजिल के बिलकुल पास पहुंच कर अगर एक अजनबी की तरह हर शब्द के साथ अपने कानूनी अधिकार का एहसास दिलाता हुआ पूरी

गंभीरता से यह सवाल करे कि उस दिन उस समय उस पलों झील के पत्थर पर तुम जो लिख रहीं थीं वह किसका नाम था? तो इस प्रश्न के बाद क्या कुछ भी कहने का किसी की दुहाई का कोई अर्थ शेष रह जाता है? मिस्टर मेहता ने भी मुझसे एक ऐसा ही सवाल किया था।

'रोशनी के लिए' कहानी की नायिका सुमिता अपने साथ हुए बलात्कार से इतनी अधिक आहत हुई कि उसने सान्त्वना देती अपनी मम्मी का हाथ सिर से हटा दिया और अपने हर शब्द को मजबूती से पकड़ते हुए कहा -

"नहीं मैं चुप नहीं रहूँगी मम्मी! मैं इस अनाचार को अपनी आत्मा पर ओढ़ कर एक सॉस भी नहीं ले सकती। मैं किसी तरह नहीं जी सकती हूँ इस जबरदस्ती लादे हुए बोझ के साथ। मैं कोर्ट में जाऊँगी।

इसी तरह एक पत्र : एक प्रश्न की नायिका का पति जब अपनी काम वासना के वशीभूत होकर उसे और बच्चों को असहाय छोड़कर चला जाता है और कई वर्षों के बाद लौटता है तो सारा परिवार उसका सहर्ष स्वागत करता है पर नायिका अपने पत्र में अपनी ननद इंदु को बिना अपनी मनःस्थिति छिपाये लिखती है-

"इंदु, अपनी ही ऑखों के सामने मैं अपने मन्दिर को देव प्रतिमा को रोज गंदी होती हुई देखू और भी बिना कुछ बोले पहले की तरह चरणों में अपनी श्रद्धा के फूल चढ़ाती रहूँ यह मेरे लिए किसी भी मूल्य पर संभव नहीं था.....आज वे अचानक आ गए हैं. बच्चे प्रसन्न हैं, परिवार वाले भगवान को धन्यवाद दे रहे हैं और इष्टमित्र सभी तो मेरे सौगाग्य की प्रशंसा में रत हैं पर मेरे पास तो उनके लिए कोई संबोधन भी नहीं बचा है.....मेरे पास अब भुवन को देने के लिए कुछ नहीं .....कुछ भी नहीं।

'खुल दरवाजे की सहनायिका अपनी सहपाठिनी की दरियानूसनी वातो को सुनकर डंके की चोट पर कहती है --

"मैं तेरी तरह कायर नहीं हूँ और न ही मेरा व्यक्तित्व किसी की पसन्द नापसन्द का मोहताज है। मैं जियूंगी तो अपनी एक निजी पहचान के साथ अपनी -अपनी उपलब्धियों के साथ..तू क्या सोचती है कि मैं विना अच्छी तरह जाँचे-परखे बिना किसी को भी अपना जीवन समर्पित कर दूंगी-असंभव है मेरे लिए।

पत्नी के रूप में नारी सबसे ज्यादा तब आहत होती है जब उसका प्रति अपने प्रेम को किसी और के साथ वॉटता है उसे यह प्रत्यक्ष अपमान अब किसी भी स्थिति में सहय नहीं है। वह पूरी तरह एकाधिकार चाहती है। पति का दुराचरण उसे अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को नकारने जैसा लगता है जो उसकी सामर्थ्य को स्पष्ट चुनौती देता है और फिर उसके अन्दर का ज्वालामुखी दहक उठता है। वह स्वयं अलग रहने का फैसला ले लेता है। ऐसे ही निर्णय लेखिका की कई कथानायिकाओं के लिए है और उन्होंने अपने भावनात्मक शोषण को स्वीकार नहीं किया।

सरोजिनी जी की कहानियों के नारी पात्रों को केवल उपरोक्त विभाजन में ही नहीं समाहित किया जा सकता है उन्होंने तो नारी को सभी स्थितियों व संबंधों के साथ देखा है और उसके अंतर्मन की गहराईयों में दबी उनकी छोटी-छोटी लालसाओं को बड़ी ही कोमलता से छुआ है। उनकी लेखनी ने नारी हृदय की अनेक अनछुई अनुभूतियों को अव्यक्त किया है। वस्तुतः वे अपने हर नारी पात्र के साथ

इतने अपनेपन से जुड़ी हुई है, इतनी अधिक एकाकार हो गई है कि उसकी हर बात उनके लिए अपनी बात बन जाती है इसीलिए उनका हर नारी पात्र अपनी छाप सहृदय पाठक पर छोड़ जाता है और उनकी संवेदनाओं को जगा कर अपने आपको स्मरणीय बना देता है।

देह व्यापार के लिए बाध्य की गई चौदह पन्द्रह आयु की अलाड किशोरी रोती हुई कहती है -

"तुम्ही बताओं है कोई दुनिया के इस छोर से उस छोर तक जो माँ नहीं बनना चाहती हो। मैं भी तो तुम सव की तरह पहले एक औरत हूँ.....ईश्वर ने कहीं कोई बेइन्साफी नहीं की, यह तो तुग लोग हो जिन्होंने हमें मजबूर किया कि हमारा दूध हमारी छातियों में ही सूख जाये।

ऊँचे-ऊँचे पहाडों और खुले जंगलों के बीच हिरनी की तरह दौडती भागती महुआ जब आदगी के खूनी पंजों द्वारा नोंची खरोंची जाती प्रकृति को देखती है तो उसका रोम-रोम रूऑसा हो जाता है-वह अपनी बचपन की सहेली महुआ से कहती-

'चलो सगुना, हम सब उन्हें समझायें कि ये सब हवा, पानी, आग, रोशनी, पेड़पौधे, फूल-पत्ती सब हमारे अपने हैं इनमें भी हमारी तरह जान है। इन्हें सताने का मतलब है अपने पैरों पर अपने आप कुल्हाड़ी मारना-हॉ सगुना, यही सच है।"-

उनकी अनपढ़ चूड़ी बेंचने वाली जस्सो और मजिस्ट्रेट के ऊँचे पद पर बैठी दीपाली दोनों की अंतर्कामना एक-सी ही है।

"अब तो रात दिन मैं परमेसर से यही मनाती रहूँ कि कौन सी सोने की घड़ी होगी जो वह लौट आयेगा।

और दीपाली ने अपनी डायरी में लिखा है-

"हे प्रभु, मुझे अगले जन्म में नारी न बनाना और बनाना तो मुझे और कुछ मत देना-न आकाश....न धरती, सिर्फ दो मज़बूत बॉहों का आश्रय देना और सब छल है..... मिथ्या है। मेरे मन का हाहाकार इसका साक्षी है।-

लेखिका भली प्रकार जानती भी है और स्वयं महसूस भी करती है कि इन सहज प्राकृतिक आंकाक्षाओं के साथ ही आज हर नारी मन ही मन अपने को एक वचन भी दे रही है कि मैं भले ही परिवार और समाज के दिए गए जीवन को ओढ़ कर जियूं पर किसी न किसी दिन मैं अपनी ही इच्छानुसार अपनी ही लय में जियूँगी। हाँ कहना हो तो हाँ कहूँगी, न कहना हो तो न कहूँगी। किसी दबाव के नीचे नहीं जियूंगी। मैं खुद गीत बनाऊँगी और खुद ही उसे गाऊँगी।

सच तो यह है कि उनकी कहानियों के हर नारी पात्र की अपनी एक अलग पहचान है। कोई परपरावादी जीवन मूल्यों का प्रतीक है और कोई नारी मुक्ति की नई चेतना का साक्षी कोई पुरुषप्रधान समाज की लौह श्रंखलाओं सी नियमावली में अपने आप बंधी निर्जीव कठपुतली और कोई अपनी अस्मिता की ओजस्वी उद्घोषणा करती साक्षात् आदि शक्ति, किसी की आत्मकथा का पृष्ठ पृष्ठ व्यथाओं से भीगा है और कोई अपनी उपलब्धियों का महाकाव्य रच रही है-इस तरह उनके विविध नारी पात्रों की विविध छवियों हैं। वस्तुतः नारी अस्मिता के संदर्भ में लेखिका का एक निश्चित निष्कर्ष है-

"मेरा अंतिम विश्वास यही है कि आदमी के आदमकद हुए बिना और अपनी अर्द्धांगिनी को, अपनी आत्मशक्ति का स्वरूप स्वीकार किए बिना

कुछ भी संभव नहीं हैं न मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा न पारस्परिक संबंधों की आत्मीयता और न सामाजिक आस्थाओं के साथ व्यक्ति की सहभागिता। यदि सचमुच संसार में एक बार फिर सतयुग के आनंद लोक का सृजन करना है तो नर और नारी दोनों को अपनी जीवन दृष्टियाँ उदार करनी होंगी और एक दूसरे की अस्मिता को भली-भॉति समझना होगा।

सरोजिनी जी ने अपने नारी पात्रों को अपने ही चिंतन का प्रतिनिधि बनाने की पूरी चेष्टा की है और इसीलिए वे बार-बार उन्हें उनकी अन्तर्निहित असीम शक्तियों की याद दिलाती हैं पर साथ ही साथ उनकी प्रकृति प्रदत्त सीमाओं का भी संकेत करती हैं। उनके नारी पात्र पुरुषों की सामंतवादी मानसिकता के प्रति विद्रोह भी करते हैं, परस्पर विच्छेद का निर्णय भी लेते हैं और अनके रूढ़ अवधारणाओं को छोड़ने का साहस भी उनमें है पर वे कभी इतने अमर्यादित और उच्छृखल नहीं होते कि कोई उन्हें नारी जाति का कलंक कहे। उन्होंने बड़ी ही सीधे सरल शब्दों में अपने मन की बात कही हैं -

"यदि मेरे नारी चरित्र पाठकों के हृदय को छूकर एक बार भी उनके मन में यह प्रश्न उठा सके कि नारी के समक्ष आज भी इतने चक्रव्यूह क्यों हैं? तो मैं बिना किसी अन्य मत की प्रतीक्षा किए यह गान लूंगी कि मेरा सृजन शत-प्रतिशत सार्थक रहा है।"

उनके नारी-पात्रों के अब तक के विश्लेषण से यह सत्य स्वतः सिद्ध हो गया है कि वे अपने पुरुष पाठकों की संवेदनायें जाग्रत करने और उनकी नारी के प्रति संकुचित दृष्टि को उदार बनाने में सफल रही हैं। आज भी नारी नियति के सारे सूत्र पुरुष के हाथ में ही हैं-इस वास्तविकता को लेखिका ने कभी नहीं नकारा और इसीलिए उन्होंने अपने नारी पात्रों से आग्रह किया है कि वे अपनी सोच को बदलें और माने कि वे अपने प्रेम और वात्सल्य की जन्मजात स्वभावगत विशेषताओं के साथ ही अपनी अस्मिता की संघर्ष यात्रा को अपनी विजय यात्रा बना सकती हैं इसके अतिरिक्त उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं हैं।

अन्त में लेखिका ने ही एक नारी पात्र का डायरी में लिखी गई शब्दावली दुहराती हूँ -

"कभी मैं अपने आप में ही इतनी तन्मय थी कि औरों की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखती थी.....और आज लगता है कि अनुराग और ममता का कितना विशाल की इस हृदय के भीतर बंद है लेकिन अब किसे दूं? सब कुछ बिना शर्त देना चाह कर भी न दे सकने की विवश व्यथा किसे सुनाऊँ? कौन समझेगा?.....

बेटी, जो बाहर से दिखाई देता है वही जीवन का पूर्ण सत्य नहीं होता। इंसान को कभी समय और प्रकृति से लड़ने का दंभ नहीं करना चाहिए। कभी-कभी इसका मूल्य सारी ज़िन्दगी चुकाना पड़ता है।"

सारतः उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कहानीकार डॉ. सरोजिनी अग्रवाल की कहानियों में उनके पात्रों की रचना वैविध्य लिए है। कहानी-लेखिका को यथा भाव उनकी सृष्टि करने में शिल्पगत कौशल प्राप्त है। वे स्वातंत्र्योत्तर एक महान कहानी कार हैं।

सन्दर्भ

1. डॉ. सरोजिनी अग्रवाल, शब्दो के घेरे; मैं और मेरी कहानियाँ से साभार
2. प्रेमचन्द्र, कुछ विचार, पृ. 53

3. उपरिवत्, पृ. 53
4. डॉ. गोविन्द शरण त्रिगुणायत; शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, भाग-2, पृ. 454
5. उपरिवत्, पृ. 454
6. डॉ. सरोजिनी अग्रवाल, शब्दों के घेर; मैं और मेरी कहानियाँ से साभार
7. उपरिवत्, बोल री कठपुतली (अपनी बात) से साभार
8. उपरिवत्,
9. उपरिवत्, शब्दों के घेरे से (अपनी बात) से साभार
10. उपरिवत्, शब्दों के घेरे से, पृ. 23
11. उपरिवत्, पृ. 96 12. उपरिवत्, पृ. 108
13. उपरिवत्, पृ. 111
14. उपरिवत्, अपनी बात से साभार
15. उपरिवत्
16. डॉ. सरोजिनी अग्रवाल, वाग्धारा, पृ. 139
17. डॉ. सरोजिनी अग्रवाल, बोली री कठपुतली, पृ. 34
18. उपरिवत्, पृ. 47
19. उपरिवत्, पृ. 61-62
20. उपरिवत्, पृ. 85
21. उपरिवत्, अविराम, पृ. 64
22. उपरिवत्, पृ. 82
23. उपरिवत्, शब्दों के घेरे से, पृ. 119
24. उपरिवत्, बोल री कठपुतली, पृ. 98